

## आविर्भाव और शैशव

भगवान एक ऐसे ही भक्तका आविर्भाव विक्रम सम्वत् १९४२ में सिन्धप्रान्त के जेकमाबाद जिले के मीरपुर ग्राम में हुआ था । उनकी भाग्यशालिनी जननी का नाम श्री सुखदेवी और पिता का नाम स्वामी रोचलदास साहब था । उन्होंने जन्म के दिन ही स्वामी आत्माराम साहब की गोद में जोकि एक उच्चकोटि के सन्त थे, अपने नवजात शिशु को अर्पित कर दिया । इसी नवजाम शिशु को आगे चलकर हम भक्तकोकिल के रूप में देखते हैं । इसलिये अभी से उसी नाम से व्यवहार करते हैं ।

भक्तकोकिल का शैशव भी साधारण मनुष्य की अपेक्षा विलक्षण ही था । साधुओं की सेवा में अत्यंत रुचि थी । श्री आत्माराम साहब के पास प्रायः साधु, महात्माओं का शुभागमन होता ही रहता था । मार्ग के थके-माँदे महात्मा जब रात्रि में शयन करते, तब भक्त कोकिल पाँच वर्ष की अवस्था में ही चुपचाप उनके पास जाकर पाँव दबाने लगते और जब व जागकर देखते ‘यह कौन है तब वे छिप जाते ! इनके लक्षणों से प्रभावित होकर बड़े-बूढ़े महात्मा भी इन्हें दिव्य मानते और पाँव दबवाने में संकोच करते ।

भक्तकोकिल पाँच वर्ष की अवस्था में ही स्वामी आत्माराम साहब की सेवा में संलग्न थे । वे शयन कर रहे थे और ये पंखा झल रहे थे । उस समय स्वामी आत्माराम साहब के मुख से निद्रा की दशा में स्वयं ही किसी मन्त्र का उच्चारण हो रहा था ।

निद्रा से उठने पर भक्तकोकिल ने बड़े प्रेम से आग्रहपूर्वक उस मन्त्र की जिज्ञासा की । स्वामी आत्माराम साहब ने कहा- “बेटा, समय आने पर तुम्हें यह स्वयं सिद्ध हो जायेगा ।”

भक्त कोकिल पाँच वर्ष की अवस्था में ही पाठशाला में भेजे गये । जब अध्यापक ने पट्टी पर वर्णमाला का पाठ पढ़ाना चाहा, जब आप बोले- “पहले आप भगवान् श्रीरामचन्द्र की लीलाकथा सुन लीजिये, फिर पढ़ाना प्रारम्भ कीजिये ।” आपने अपनी तोतली बोली में अध्यापक जी को पहले भगवान् श्रीराम की कथा का पाठ पढ़ाया, फिर पीछे वर्णमाला की शिक्षा ग्रहण की । यह बात उस पाठशाला के अध्यापक पमनदासजी ही स्वयं कहा करते थे ।

सिन्धी भाषा का उस पाठशाला में आपने केवल चार पाँच दिन तक अध्ययन किया । स्वयं स्वामी आत्माराम साहब ने पाँच-सात दिनों तक फारसी की शिक्षा दी । कुल दो महीनों में ही आपने अनेक भाषाओं का अभ्यास कर लिया । आपकी प्रतिभा देखकर पढ़ाने वाले आश्चर्य चकित रह जाते थे । मौलवी साहब ने तो कहा इनको और कोई भी आकर पढ़ाता है क्या ?” परन्तु उन्हें पढ़ाने वाले की अपेक्षा नहीं थी; सभी विद्याएं स्वयं सिद्ध थीं ।

एक दिन स्वामी आत्माराम साहब जी शयन कर रहे थे और भक्तकोकिल पंखा झल रहे थे । पास में ही श्रीहनुमन्नाटक की पुस्तक रखी हुई थी । स्वामीजी बालसंन्यासी तपस्वी, त्यागी एवं आत्मनिष्ठ थे । हनुमन्नाटक से उनकी इतनी प्रीति थी कि वे उसे पढ़ते-पढ़ते भावमग्न होकर नृत्य करने लगते थे । भक्तकोकिल जी इतनी छोटी अवस्था में पंखा झलते-झलते उस ग्रन्थ का आधा अंश पढ़ गये । जागने पर स्वामीजी ने आश्चर्य चकित होकर उन्हें हृदय से लगा लिया और कहा-

“इतनी देर में तो मैं भी इतना नहीं पढ़ सकता ।”

एक दिन भक्तकोकिलजी स्वामी आत्माराम साहब की सेवा के लिये जंगल में कंडे लेने के लिये गये । ग्रीष्म ऋतु थी । दिन चढ़ गया, धरती तप गयी । आप नंगे पाँव कंडे सिरपर लिये आ रहे थे । उसी समय एक सज्जन उसी रास्ते घोड़े पर निकले । उन्होंने कहा- “बेटा, तुम कंडे फेंक दो और घोड़े पर

बैठ जाओ ।” परन्तु भक्तकोकिलजी ने स्वीकार न किया । उनमें बचपन से ही श्रीगुरुसेवा की पक्की लगन थी । उसी समय बादल घिर आये, वर्षा होने लगी ।

भगवान् जिसके साथ खेलना चाहते हैं, प्रारम्भ से ही उसके जीवन निर्माण पर एक सजग दृष्टि रखते हैं । उसके अन्तः करण में कोई और रंग चढ़ने न पावे, संसार कर किसी वस्तु या

व्यक्ति उसकी ममत्वबुद्धि न हो जावे, कहीं उलझ न जाय, इसका स्वयं ही बिना किसी साधना-प्रार्थना के ध्यान रखते हैं । छः महीने की अवस्था में ही भक्तकोकिल की माताजी इस लोक से हटा ली गयी थी । पिता श्री रोचलदासजी साहब बड़े ही गुरु- भक्त सत्संगप्रेमी उदारचेता थे । वे अपना वेतन, अपने वस्त्र तक गरीबों को दे दिया करते थे । भक्तकोकिलजी की छः वर्ष की अवस्था में ही वे भी भगवद्धाम बुला लिये गये । अन्तिम समय में उन्होंने अपना सब कुछ गरीबों को बाँट दिया, अपने बच्चों के लिये कुछ नहीं छोड़ा । स्वामी आत्माराम जी ने कहा- ‘तुम सबकुछ लुटा देते हो, बच्चों के लिये कुछ नहीं छोड़ते ?’ वे बोले- “मैंने इन बच्चों का प्रारब्ध तो नहीं लुटाया है । ईश्वर सबकी रक्षा करता है ।”

अब भक्तकोकिल जी के एकमात्र अवलम्ब स्वामी आत्माराम साहब रह गये । निरन्तर उन्हीं की सेवा में रहते थे, प्रीति की धारा सिमितकर एक ओर बहने लगी । स्वामी आत्माराम जी भक्तकोकिल पर बड़ी कृपा और स्नेह रखते थे । अन्य शिष्यों को तो राजसी ठाट-बाट से भी रहने देते, परन्तु इनके अन्दर त्याग, वैराग्य, तितिक्षा, सरलता, नम्रता, सेवा आदि सद्गुणों की वृद्धि हो इस बात का ध्यान सर्वदा रखते थे । किसी के यह पूछने पर कि “इनको आप वस्त्र, आभूषण आदि क्यों नहीं धारण कराते ?” उन्होंने उत्तर दिया था कि “इनको मैं और ही आभूषण धारण करा रहा हूँ ।”